

गैरो से क्या गिला करे जब अपने बदल गए गजल लिरिक्स



गैरो से क्या गिला करे,
जब अपने बदल गए।

दोहा – चांदनी रात में,
बरसात बुरी लगती है,
दर्द सीने में हो तो,
हर बात बुरी लगती है।
अदाओं की मोहनी,
सूरत बिगाड़ देती है,
बड़ों बड़ों को,
जरूरत बिगाड़ देती है।
इस रंग भरी दुनिया में,
जरा संभल के चलना प्यारो,
क्योंकि कभी-कभी लोगों को,
किस्मत बिगाड़ देती है।

गैरो से क्या गिला करे,
जब अपने बदल गए,
आईना वही है मगर,
चेहरे बदल गए,
गैरों से क्या गिला करें,
जब अपने बदल गए। bdi

मेहंदी का रंग देखकर,
किस्मत बदल गई,
घर में बहू के आते ही,
बेटे बदल गए,
गैरों से क्या गिला करें,
जब अपने बदल गए। bdi

मैं भी तो वही हूँ,
मेरी पुकार वही है,
फिर क्यों दुनिया के लोग,
कैसे बदल गए,
गैरों से क्या गिला करें,
जब अपने बदल गए। bdi

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरूर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - <https://www.bhajandiary.com>



जब था मेरे पास पैसा,
जब नाते हजार थे,
जब मैं हुआ गरीब तो,
सब नाते बदल गए,
गैरों से क्या गिला करें,
जब अपने बदल गए।bd।

गैरो से क्या गिला करें,
जब अपने बदल गए,
आईना वही है मगर,
चेहरे बदल गए,
गैरों से क्या गिला करें,
जब अपने बदल गए।bd।

Upload By – Manish Sondhiya